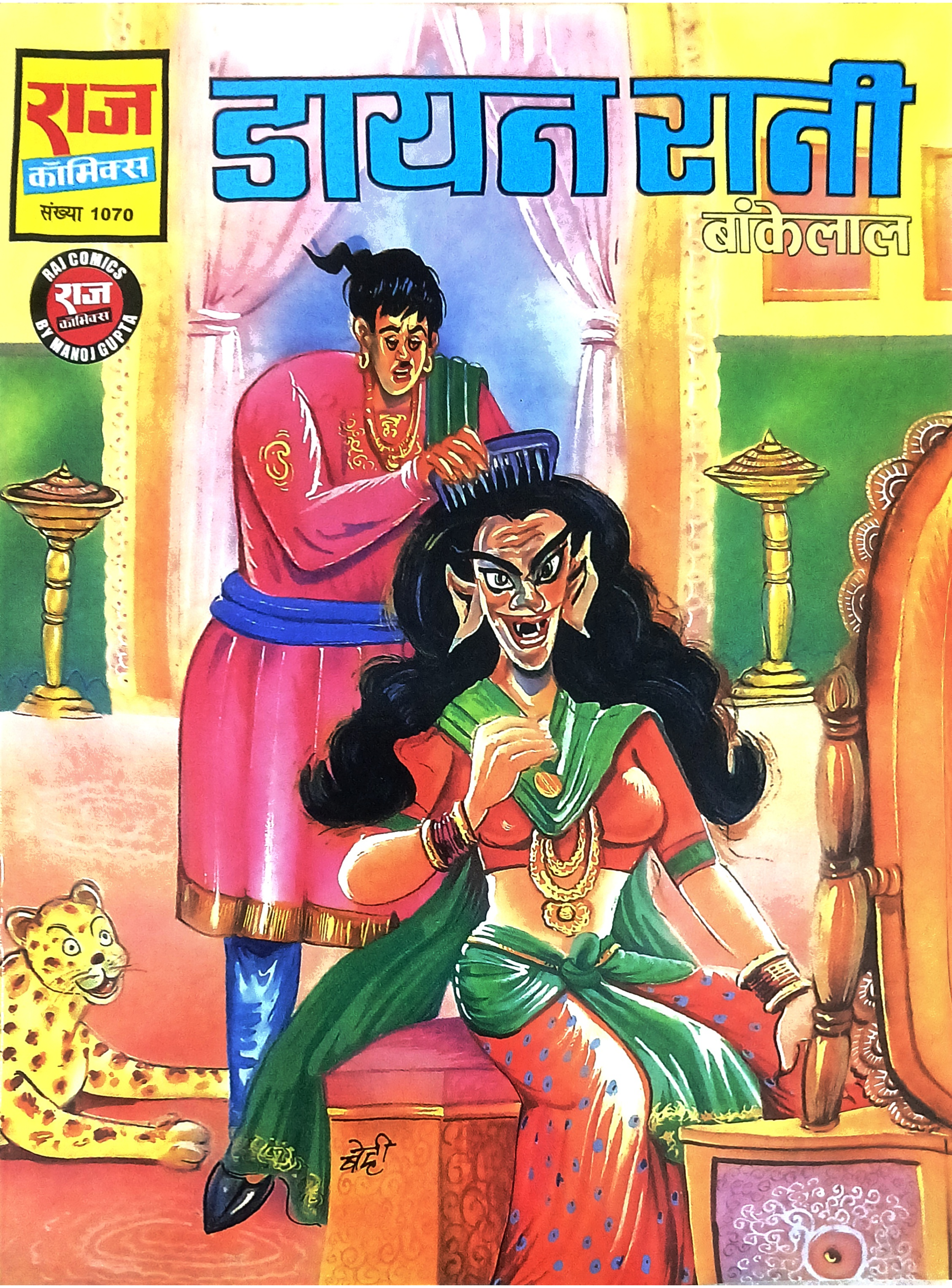

राज
कॉमिक्स
संख्या 1070
डायन रानी
बांकेलाल
RAJ COMICS
राज
कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA
बेदी

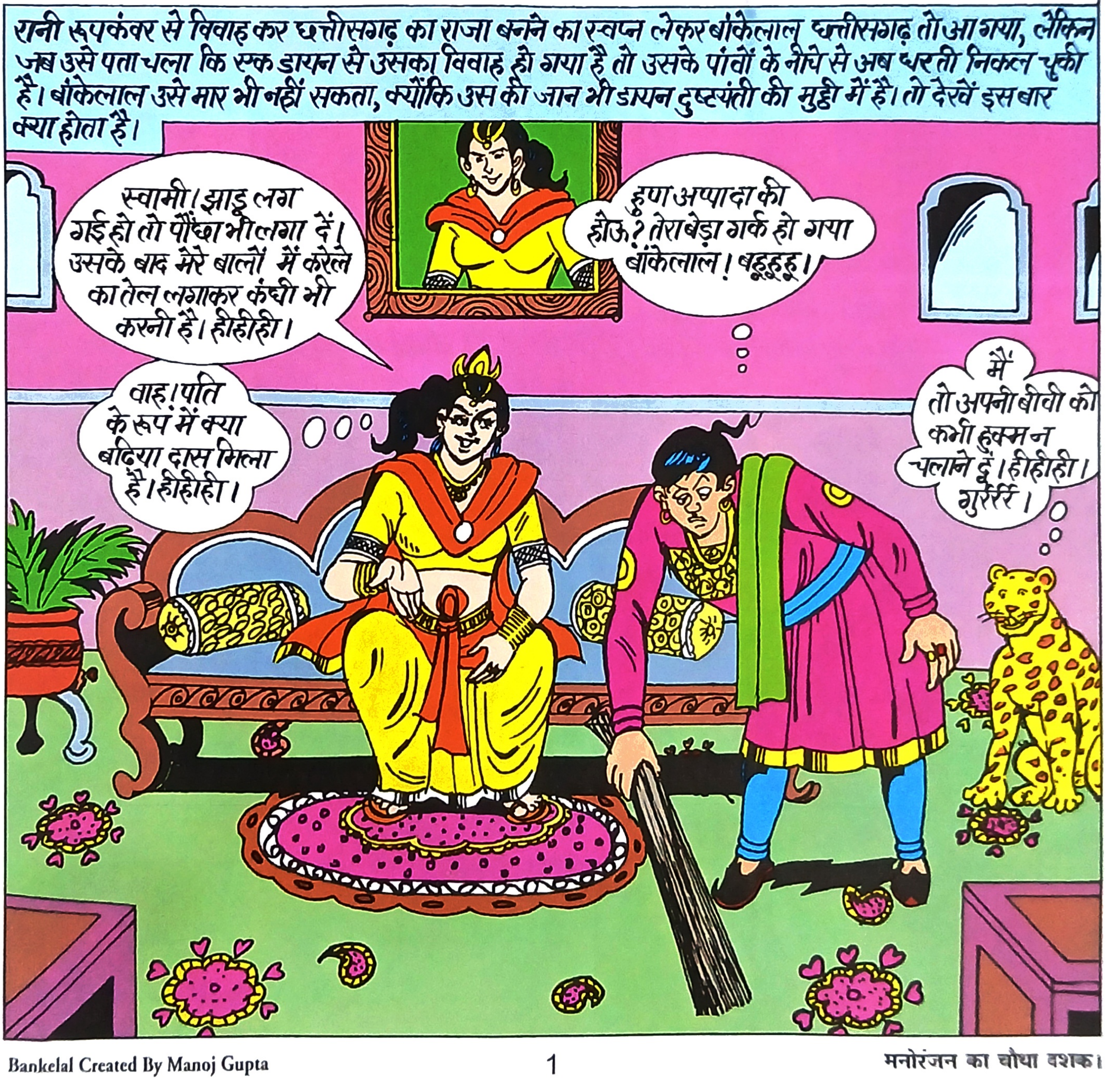
हास्य सम्राट बांकेलाल का रोमांचक कॉमिक

डायन रानी



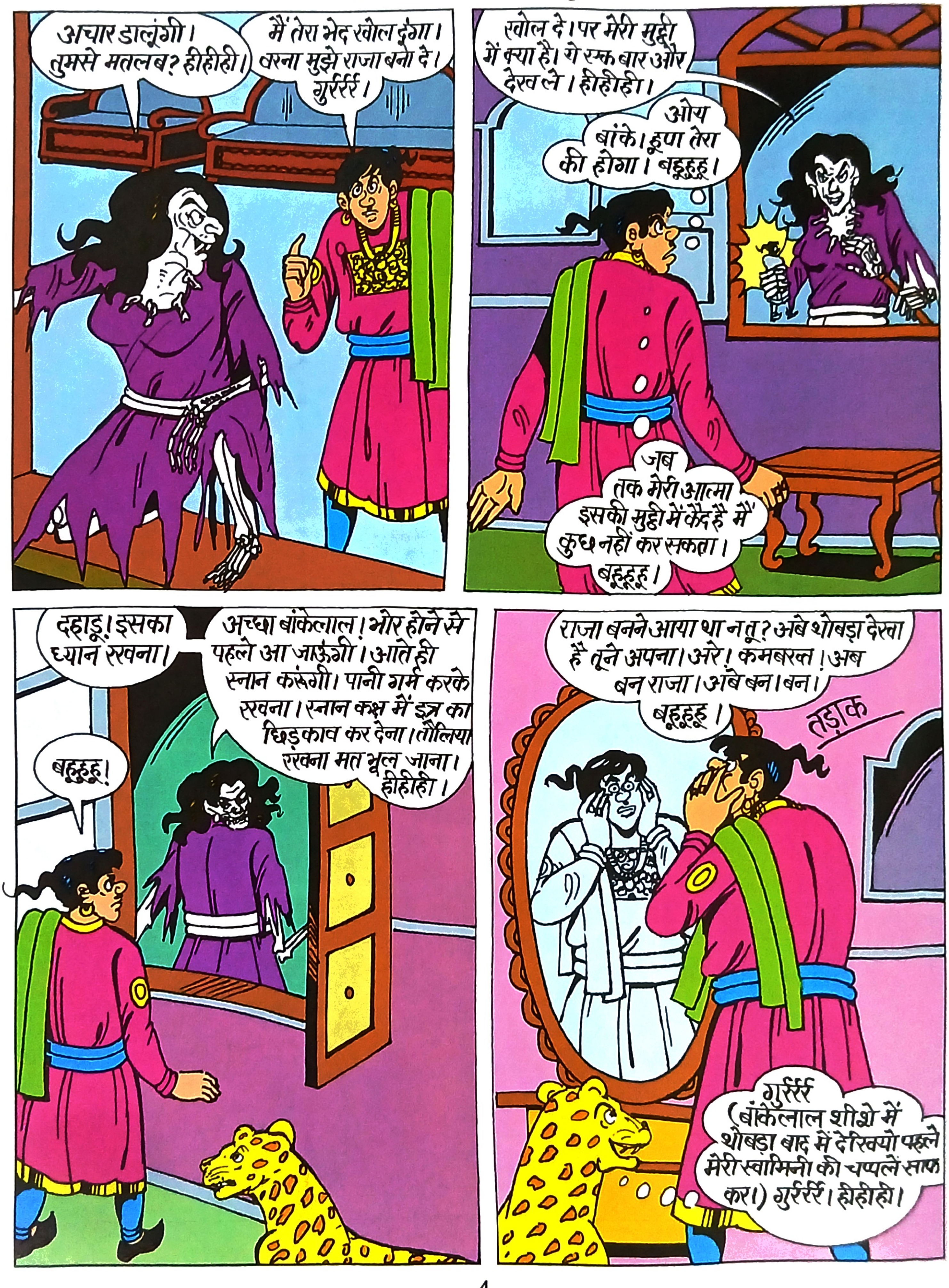
लेखक: तरुण कुमार वाही चित्रांकन: बेदी

संपादक: मनोज गुप्ता सहयोग: अमित, गौरव, श्रीकांत



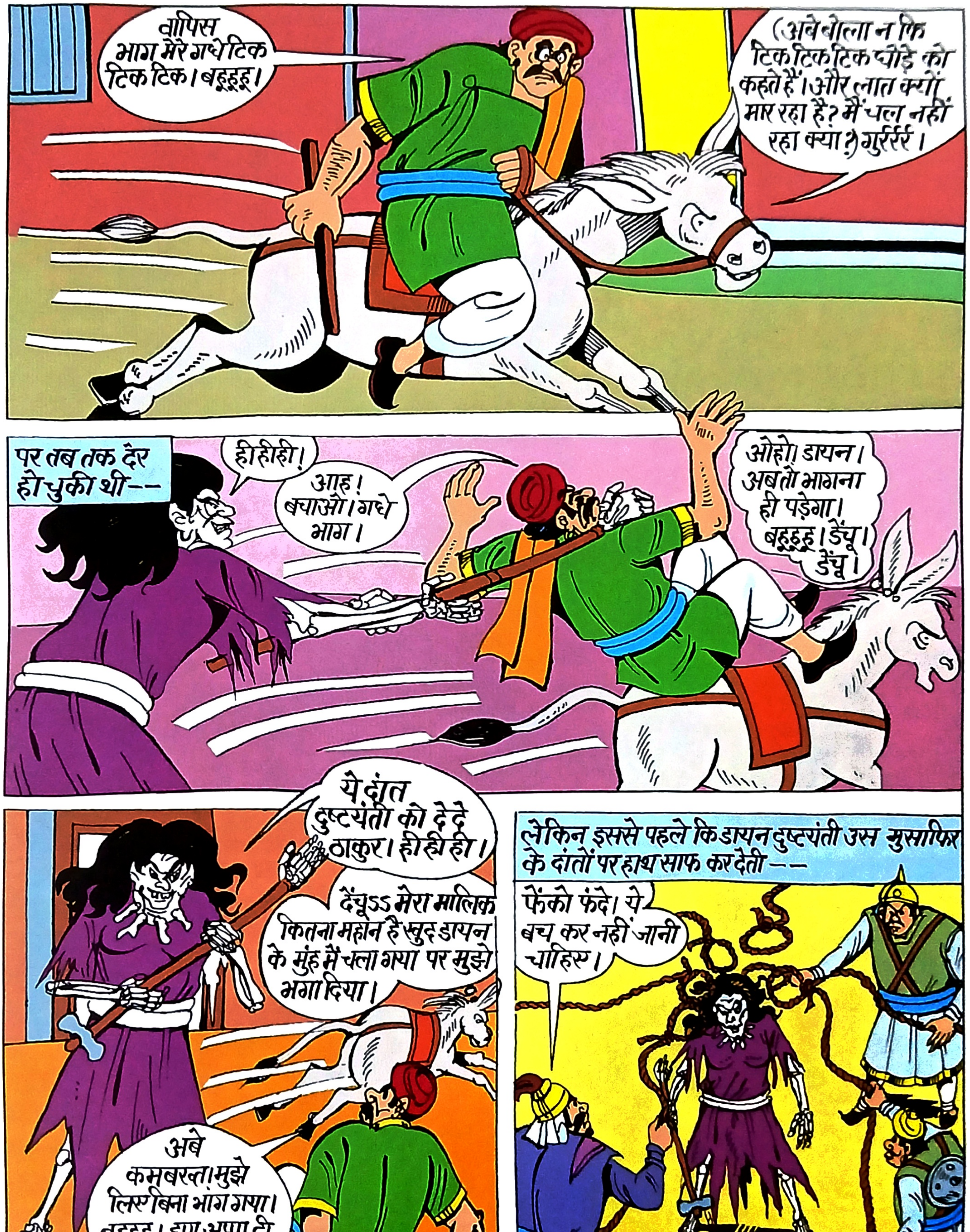

वाह। तेल मालिश से मेरा दिमाग तरोताजा हो गया।
और मेरा सड़ गया। बुहूहूहू।
कंघी से बालों में मजबूती आ गई। हीहीही।
अब बालों में चुटिया गूंथ दो। हीहीही।
बुहूहूहू! बेटा बांके! अब क्या सारी उम्र ऐसे ही नौकर बनकर रहना होगा।
हीहीही!
ओह! सूर्यास्त हो गया।
तो अब ये क्या करेगी?

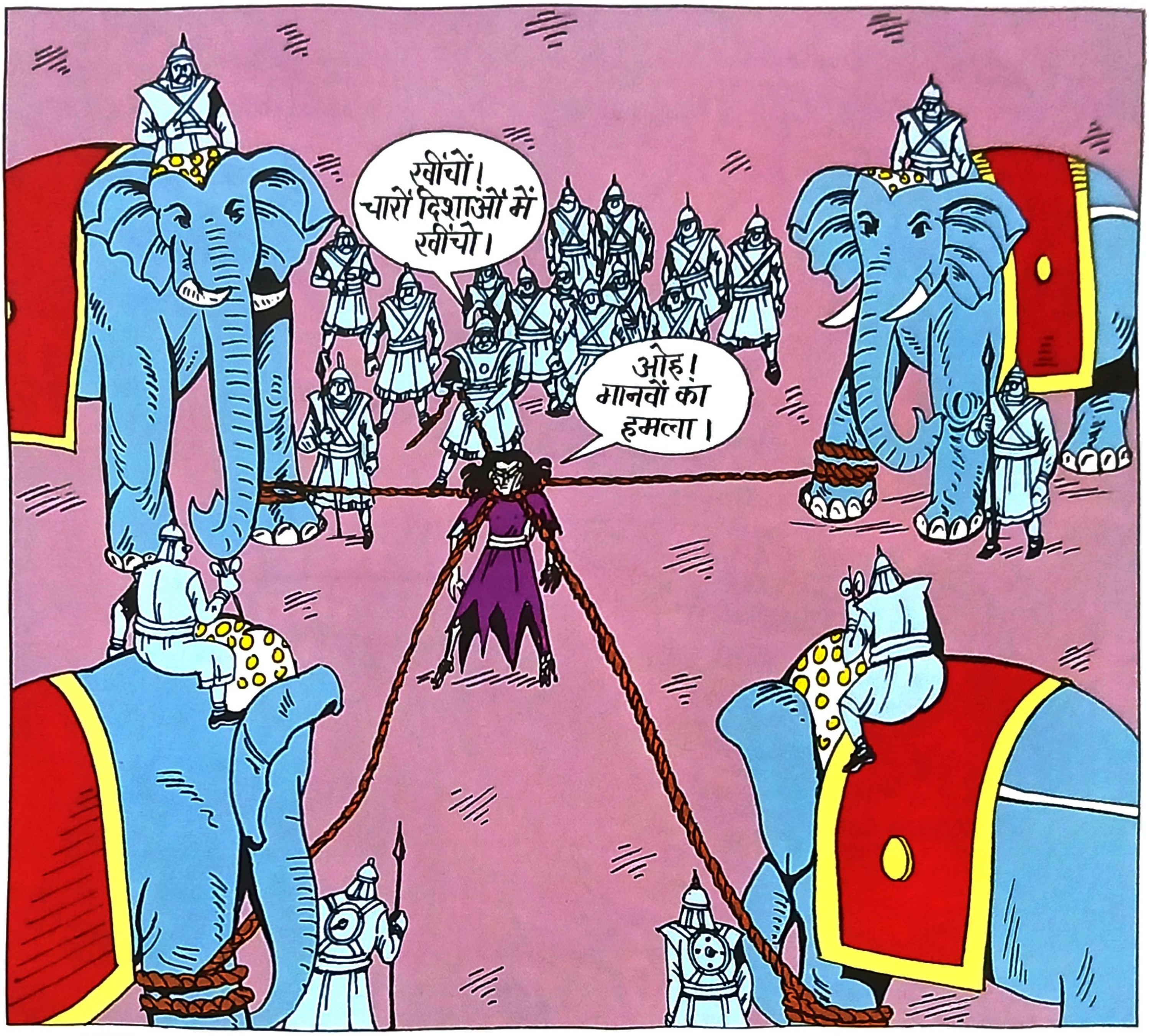

ओह! ये तो अपना शस्त्र ढीठ निकाल रही है, जिसे मैंने तोड़ दिया था पर इसने गोंद लगा कर फिर जोड़ लिया है।
रानी पलटी तो--
हीहीही।
ईईईऽऽऽऽऽ
दुष्टयंती का असली रूप देखकर डर गया क्या? हीहीही।
बीवी का रूप तो होता ही ऐसा है पर डायन का वेश धर कर तू कहां जा रही है (दुष्टा)?
छत्तीस दांतों का जोड़ा प्राप्त करने हीहीही।
उसका तू क्या करेगी (डायन)?


अचार डालूंगी। तुमसे मतलब? हीहीही।
मैं तेरा भेद खोल दूंगा। वरना मुझे राजा बना दे। गुर्रर्रर।
खोल दे। पर मेरी मुट्ठी में क्या है। ये एक बार और देख ले। हीहीही।
ओय बांके। हुण तेरा की होगा। बहूहूहू।
जब तक मेरी आत्मा इसकी मुट्ठी में कैद है मैं कुछ नहीं कर सकता। बहूहूहू।
दहाड़ू! इसका ध्यान रखना।
अच्छा बांकेलाल! भोर होने से पहले आ जाऊंगी। आते ही स्नान करूंगी। पानी गर्म करके रखना। स्नान कक्ष में इत्र का छिड़काव कर देना। तौलिया रखना मत भूल जाना। हीहीही।
बहूहूहू!
राजा बनने आया था न तू? अबे थोबड़ा देखा है तूने अपना। अरे! कमबख्त! अब बन राजा। अबे बन। बन।
बहूहूहू।
तड़ाक
गुर्रर्रर (बांकेलाल शीशे में थोबड़ा बाद में देखियो पहले मेरी स्वामिनी की चप्पलें साफ कर।) गुर्रर्रर। हीहीही।

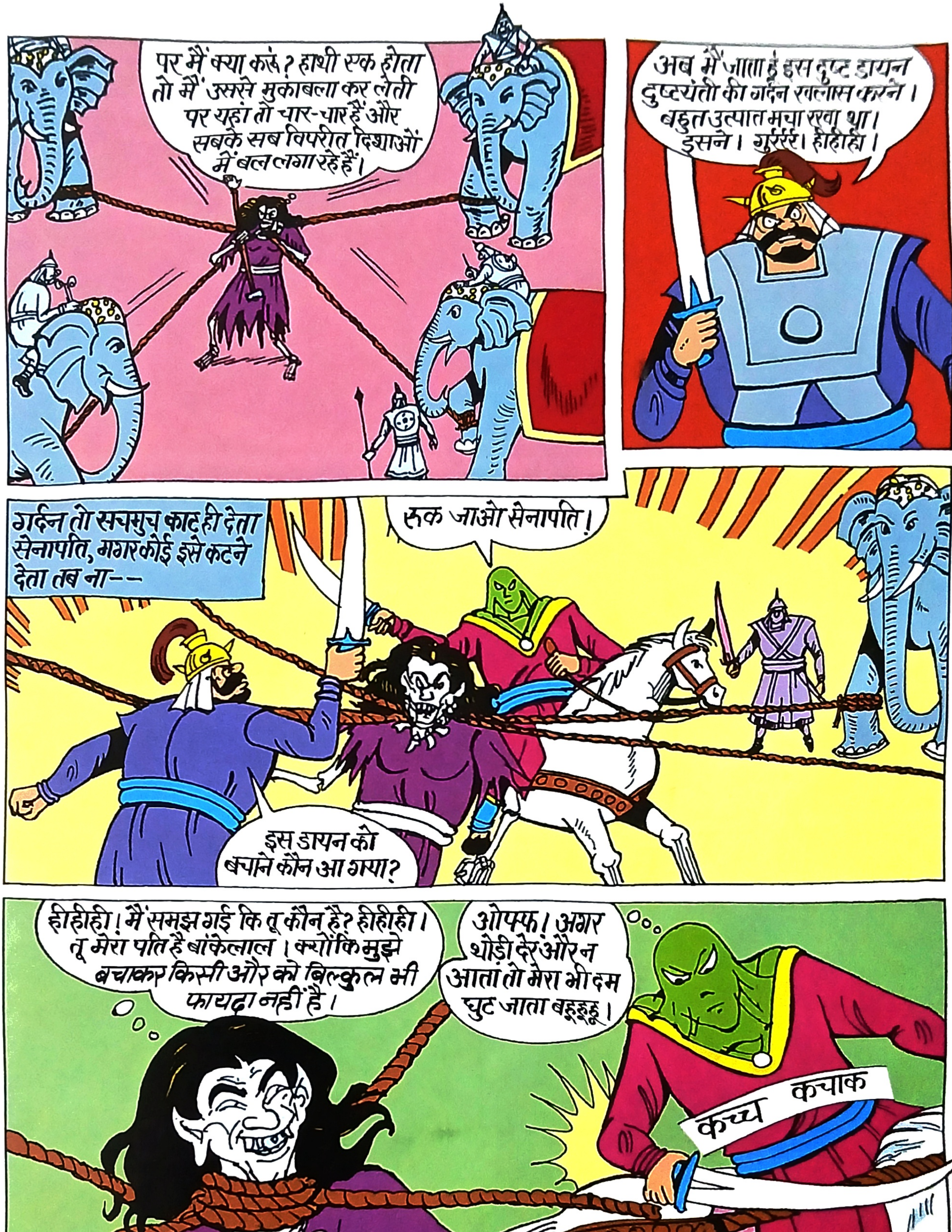

उसी समय!
ओह! ये कौन है? ये तो...
!!
...डायन रानी है। पर ये महल से कहां से आ रही है? कहीं इसने महल में किसी के जबड़े का कबाड़ा तो नहीं कर दिया?
!!
सैनिक दुधारू सिंह! मैं इसके पीछे जाता हूं। तुम फौरन महाराज बांकेलाल जी को सूचित करो क्योंकि तुरंत ही कोई कार्यवाही करनी होगी। आज ये डायन बचकर नहीं जानी चाहिए।
और---
क्या?
जी हां। छत्तीसगढ़े आजम।
अबे चुपकर! नौकरे आजम को छत्तीसगढ़े आजम कह कर मेरा दिल मत जला कमबख्त।

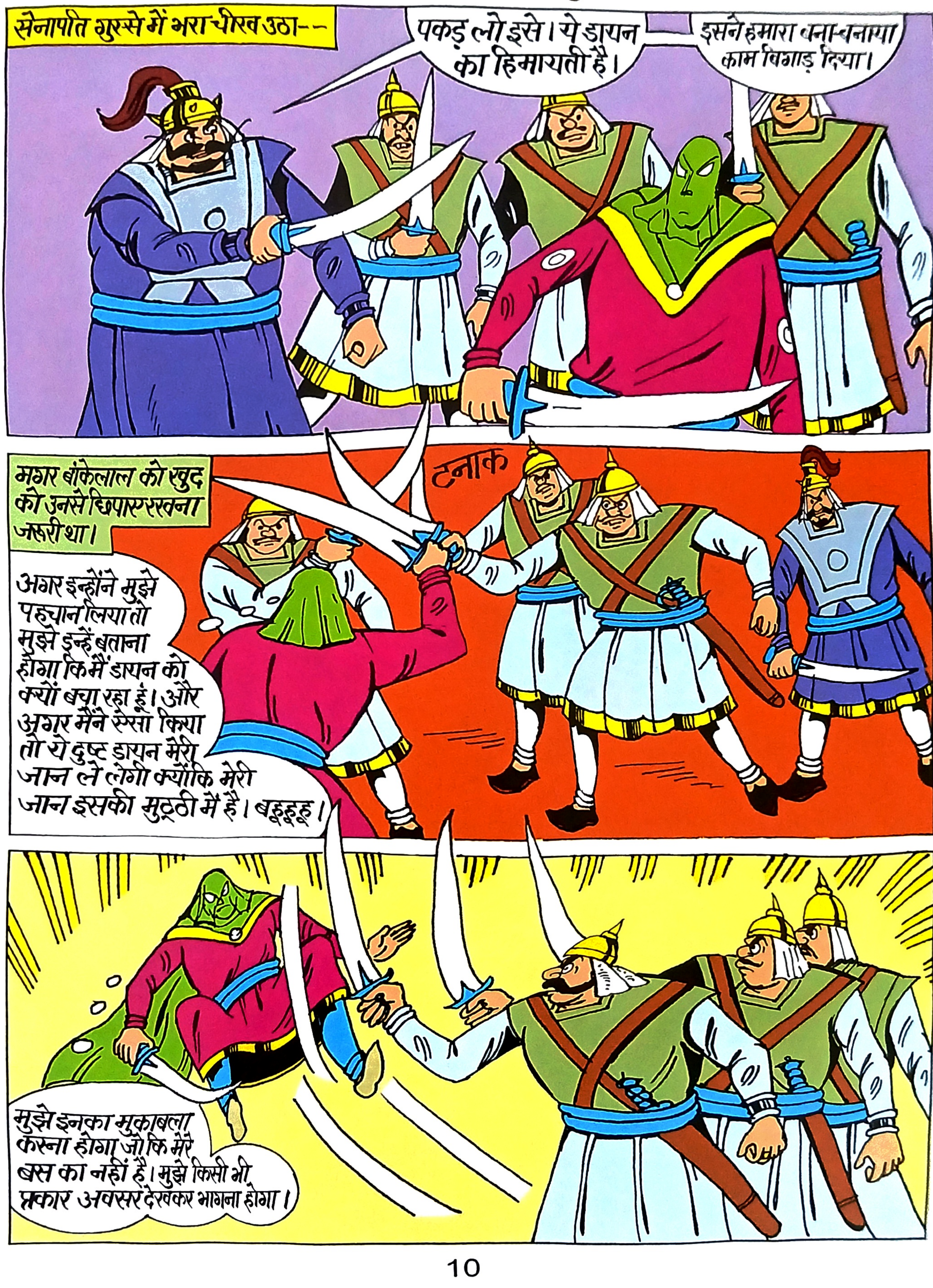

सैनिक ने जो सूचना दी थी, उसे सुनकर तो बांकेलाल के होश ही उड़ गए थे।
अगर सेनापति का हमला कामयाब हो गया और डायन मर गई या घायल हो गई तो मेरी जान पर बन आएगी।
गर्र्र्र्र! दहाड़! (लात खाए बिना कोई काम मत करियो। सोच क्या रहा है? चल। जल्दी कर। तुझे स्वामिनी की रक्षा करनी है।) हीहीही।
जा तो रहा हूं। बहुहुहु।
तड़ाक
कितना वफादार शेर है न? अपनी स्वामिनी पर संकट आया देखा तो मुझे धक्के देकर उस संकट को दूर करने को कह रहा है। हीहीही। गुर्र्र्र्र।
किंतु महाराजे आजम। रानी जी पर संकट कहां आया है?
म... मेरा मतलब आ तो सकता है। हीहीही।
संकट तो फिलहाल छत्तीसगढ़ के निवासियों पर मंडरा रहा था। दुष्टयंती के रूप में।
वाह! मिल गया पहला शिकार।
चल मेरे गधे टिक टिक टिक।
ढेंचू अबे टिक टिक टिक घोड़े को बोलते हैं। हीहीही।


वापिस भाग मेरे गधे टिक टिक टिक। बहुहुहू।
(अबे बोला न कि टिक टिक टिक घोड़े को कहते हैं। और लात क्यों मार रहा है? मैं चल नहीं रहा क्या?) गुर्रर्र।
पर तब तक देर हो चुकी थी--
ही ही ही।
आह! बचाओ। गधे भाग।
ओहो! डायन। अब तो भागना ही पड़ेगा। बहुहुहू। डेंचू। डेंचू।
ये दांत दुष्टयंती को दे दे ठाकुर। ही ही ही।
डेंचूऽऽ मेरा मालिक कितना महान है खुद डायन के मुंह में चला गया पर मुझे भगा दिया।
अबे कमबख्त! मुझे लिए बिना भाग गया। बहुहुहू। हुण अप्पा दी की होऊ?
लेकिन इससे पहले कि डायन दुष्टयंती उस मुसाफिर के दांतों पर हाथ साफ कर देती --
फेंको फंदे। ये बच कर नहीं जानी चाहिए।


खींचों! चारों दिशाओं में खींचो।
ओह! मानवों का हमला।


दुष्टयंती का दम फूल गया।
हम्फ! ये हाथी मिलकर मेरी गर्दन को चारों दिशाओं में खींच रहे हैं। इस प्रकार तो ये मेरी गर्दन ही तोड़ देंगे। बहूहूहू!


पर मैं क्या करूं? हाथी एक होता तो मैं उससे मुकाबला कर लेती पर यहां तो चार-चार हैं और सबके सब विपरीत दिशाओं में बल लगा रहे हैं।
अब मैं जाता हूं इस दुष्ट डायन दुष्यंती की गर्दन खलास करने। बहुत उत्पात मचा रखा था इसने। गुर्रर्र। हीहीही।
गर्दन तो सचमुच काट ही देता सेनापति, मगर कोई इसे कटने देता तब ना--
रुक जाओ सेनापति!
इस डायन को बचाने कौन आ गया?
हीहीही! मैं समझ गई कि तू कौन है? हीहीही। तू मेरा पति है बांकेलाल। क्योंकि मुझे बचाकर किसी और को बिल्कुल भी फायदा नहीं है।
ओफ्फ! अगर थोड़ी देर और न आता तो मेरा भी दम घुट जाता बहूहूहू।
कच्च कचाक


सेनापति गुस्से में भरा चीख उठा--
पकड़ लो इसे। ये डायन का हिमायती है।
इसने हमारा बना-बनाया काम बिगाड़ दिया।
मगर बांकेलाल को खुद को उनसे छिपाए रखना जरूरी था।
टनाक
अगर इन्होंने मुझे पहचान लिया तो मुझे इन्हें बताना होगा कि मैं डायन को क्यों बचा रहा हूं। और अगर मैंने ऐसा किया तो ये दुष्ट डायन मेरी जान ले लेगी क्योंकि मेरी जान इसकी मुट्ठी में है। बहुहुहू।
मुझे इनका मुकाबला करना होगा जो कि मेरे बस का नहीं है। मुझे किसी भी प्रकार अवसर देखकर भागना होगा।


बांकेलाल को वो अवसर डायन दुष्टपंती ने ही दिया--
अगर एक बार मुझे छत्तीस दांतों का जबड़ा मिल जाए तो फिर चार तो क्या मैं चालीस हाथियों का भी मुकाबला कर लूंगी। किंतु ये सैनिक मेरे आगे मच्छर से अधिक हैसियत नहीं रखते।
कच्चाक
आह
मैंने इसे कैद मुक्त तो कर ही दिया है। अब बाकी का काम ये खुद कर लेगी। मैं तो यहां से भागूं। हीहीहि। बहुहूहू।
अरे! भागता कहां है?
ओह! मेरा जूता।
सांय!
फच्चाक
बिना जूते के ही भागना पड़ेगा।


डायन अपने काम में व्यस्त थी--
खाली हाथ नहीं जाऊंगी। तुम्हारे दांत गिन कर जाऊंगी। हीहीही।
तड़ाक
आह
मेहनत बेकार गई। तुममें से किसी का भी जबड़ा छत्तीस दांतों का नहीं है।
सेनापति! तेरे दांत भी गिनकर जाऊंगी क्योंकि अब सिर्फ तू बचा है। हीहीही।
मैं तेरे लिए काफी हूं।


दुष्टयंती ने एक और विचित्र हरकत की।
मुझसे मुकाबला बाद में करना पहले इन जोंकों से पीछा छुड़ा सेनापति जो तेरा खून पी जाएंगी। हीहीही।
जोंक जोंक जोंक जोंक हीहीही।
जोंकों की ये विशेषता होती है कि उन्हें शरीर से चिपकने में थोड़ा समय लगता है। और ये एक बार शरीर से अच्छी तरह से चिपट जाएं तो फिर इन्हें शरीर से अलग करना मुश्किल होता है। मुझे इन्हें ही पहले अपने चेहरे से अलग करना होगा। पर इस प्रकार तो ये डायन मेरा जबड़ा भी तोड़ देगी। बहुहुहु।
इसे छत्तीस दांतों का जबड़ा चाहिए। इसे अपने दांत खोलकर गिनवा देता हूं। इस प्रकार फिलहाल मेरा जबड़ा तो बच ही जाएगा। हीहीही।
अबे क्यों नोच रहा है? थोड़ा सा खून पीने दे न। बहुहुहु।
सेनापति। अब गए तेरे दांत भी। हीहीही।
नहीं ठहर जा डायन। मैं मुंह खोल देता हूं। तुझे दांत गिनने हैं तो गिन ले। मेरे बत्तीस हैं।

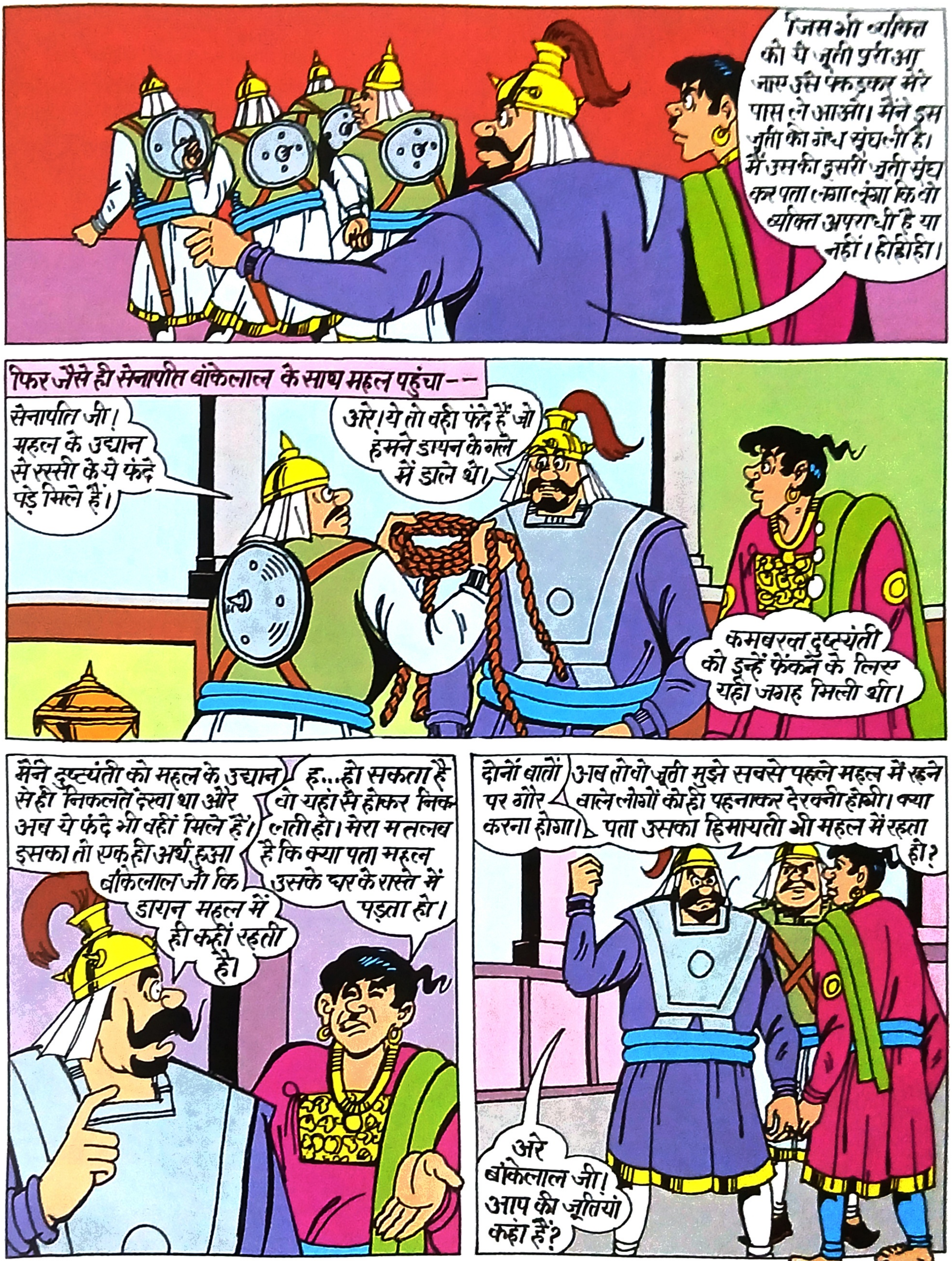

ऐसा करके तूने अपना जबड़ा बचा लिया। हीहीही। ओह! ये शोर कैसा?
मारो मारो।
बांकेलाल जी बाकी सैनिकों को लेकर आ गए हैं। और उनके साथ छत्तीस-गढ़ की प्रजा भी है। हीहीही। अब तू नहीं बचेगी।
डायनरानी ने ढीठ से सेनापति के सिर पर प्रहार किया और वहां से भागते हुए बोली --
मुझे दांतों की ऐसी जल्दी भी नहीं है सेनापति। मैं अपना काम बाद में निबटा लूंगी। फिलहाल मैं चलती हूं।
सेनापति जी! कहां है वो दुष्टा डायन?
वो तो भाग गई।


मगर कब तक बचेगी। ये जूता उसके एक हिमायती का है बांकेलाल जी। अगर ये व्यक्ति मिल जाए तो हम दुष्टयंती तक भी पहुंच सकते हैं।
ये मेरी ही जूती है। बहुहुहू! मर गए।
और जल्दबाजी में मैंने भी ध्यान नहीं दिया। इस वक्त भी मैंने एक ही जूती पहनी हुई है। अगर किसी की निगाह पड़ गई तो मैं फौरन पकड़ा जाऊंगा।
इस जूती को यहीं छोड़ना होगा। अंधेरे के कारण किसी का भी ध्यान मेरे पांवों की तरफ नहीं जाएगा।
बहुहुहू। इस डायन ने तो मुझे कहीं का नहीं रखा।
बांकेलाल जी। आप चुप क्यों हो गए?
आहां। कुछ नहीं। मैं सोच रहा था कि ये जूती किसकी है इसका पता कैसे लगे?
ये तो मैं सोच भी चुका हूं। बहुत आसान है।


छत्तीसगढ़ कोई बहुत बड़ा राज्य नहीं। ये जूती किसी पुरुष की है। हम प्रत्येक पुरुष को ये जूती पहना कर देखेंगे, जिसे पूरी आ गई, वही अपराधी है।
मर गए। मेरा मतलब सेनापति ये भी तो हो सकता है कि ये जूती एक से अधिक पुरुषों को पूरी आ जाए। क्योंकि दो व्यक्तियों के पांवों का नाप एक भी तो हो सकता है।
नाप एक ही सकता है। किंतु पांव की खुशबू एक नहीं हो सकती।..आ...ह।
अरे! क्या हुआ सेनापति जी को?
इन्होंने (मेरी) जूती सूंघ ली थी। हीहीही। इन्हें महल ले चलो।
न...नहीं। म... मैं अब ठीक हूं।
सैनिको! तुम घर-घर जाकर इसी वक्त इस जूती के स्वामी की खोज आरम्भ कर दो।
!!

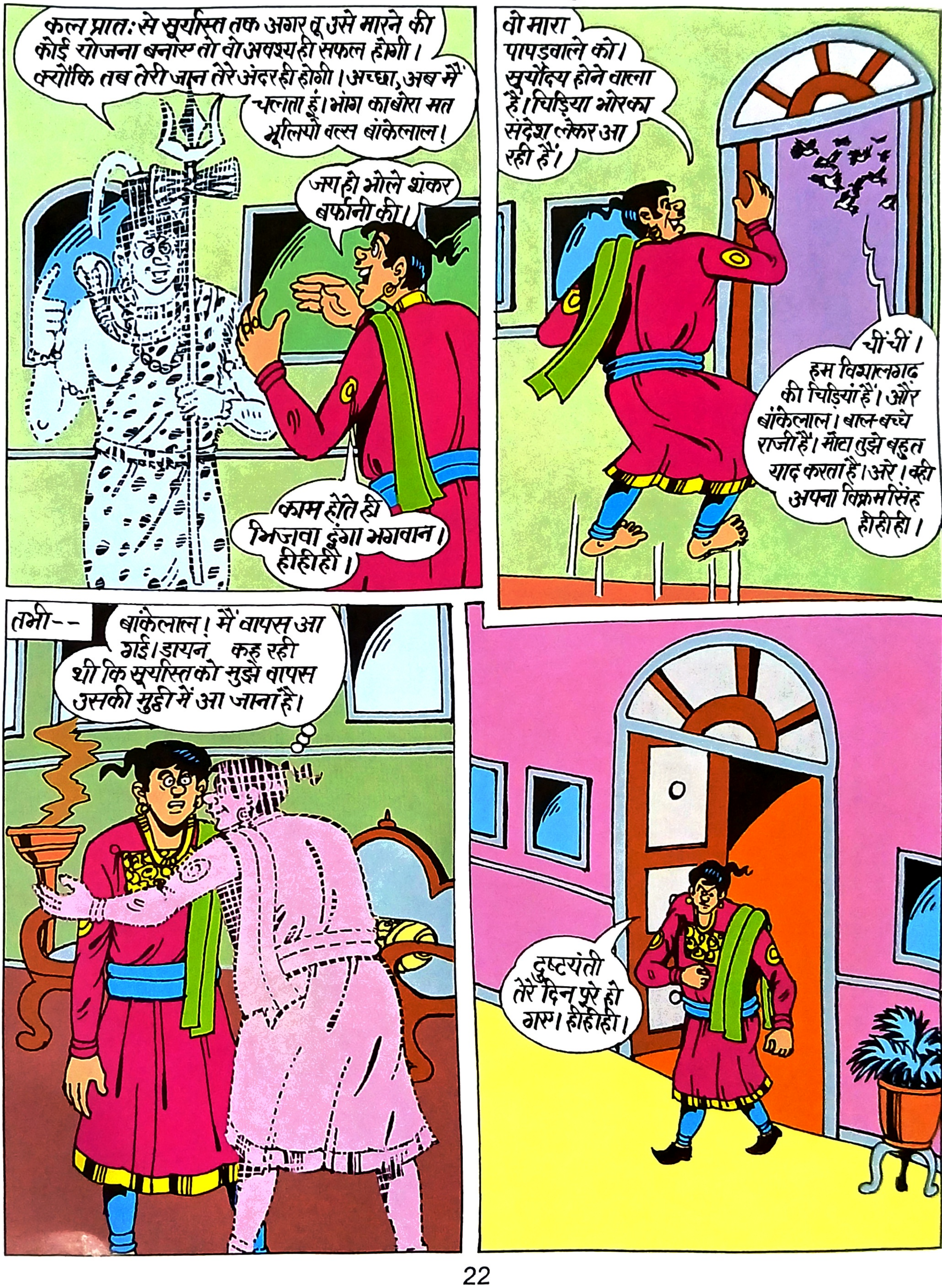
कहानी 19 पेज से जारी

दर्शाए गए मूल्य, उपहार एवं योजनाएं प्रस्तुत संशोधित संस्करण में इस कॉमिक्स के प्रथम संस्करण की मौलिकता को बनाए रखने के लिए यथावत लिए गए हैं। वर्तमान में इन मूल्यों, उपहारों, योजनाओं और उपलब्धता को लेकर पाठक भ्रमित ना हों।


जिस भी व्यक्ति को ये जूती पूरी आ जाए उसे पकड़कर मेरे पास ले आओ। मैंने इस जूती की गंध सूंघ ली है। मैं उस की दूसरी जूती सूंघ कर पता लगा लूंगा कि वो व्यक्ति अपराधी है या नहीं। हीहीही।
फिर जैसे ही सेनापति बांकेलाल के साथ महल पहुंचा--
सेनापति जी! महल के उद्यान से रस्सी के ये फंदे पड़े मिले हैं।
अरे! ये तो वही फंदे हैं जो हमने डायन के गले में डाले थे।
कमबख्त दुष्यंती को इन्हें फेंकने के लिए यही जगह मिली थी।
मैंने दुष्यंती को महल के उद्यान से ही निकलते देखा था और अब ये फंदे भी वहीं मिले हैं। इसका तो एक ही अर्थ हुआ बांकेलाल जी कि डायन महल में ही कहीं रहती है।
ह...हो सकता है वो यहां से होकर निकलती हो। मेरा मतलब है कि क्या पता महल उसके घर के रास्ते में पड़ता हो।
दोनों बातों पर गौर करना होगा।
अब तो वो जूती मुझे सबसे पहले महल में रहने वाले लोगों को ही पहनाकर देखनी होगी। क्या पता उसका हिमायती भी महल में रहता हो?
अरे बांकेलाल जी! आप की जूतियां कहां हैं?


व... वो मैं डायन के आने का समाचार सुनकर फौरन ही भाग पड़ा था। इसीलिए जूतियां पहनना भूल गया होऊंगा। हीहीही।
ओह! सैनिक को बुलवाता हूं। सबसे पहले जूती आपको ही पहना कर देखनी होगी। हीहीही।
बांकेलाल की सिट्टी-पिट्टी गुम थी।
बहुहुहु! जूती पहनाए जाते ही मैं पकड़ा जाऊंगा और मुझसे पूछा जाएगा कि मैंने डायन को क्यों बचाया तो मैं क्या जवाब दूंगा। बहुहुहु।
और अगर कोई जवाब नहीं दिया तो मुझे खूनी डायन को बचाने के आरोप में फांसी पर भी चढ़ाया जा सकता है। बहुहुहु।
हे भोले शंकर! ये तूने मुझे किस जंजाल में फंसा दिया।
भोले शंकर! मुझे इस जंजाल से निकालो भोले शंकर। मैं तुम्हारा पुराना भक्त हूं। मुझे दर्शन देकर मेरा संकट दूर करो। मैं तुम्हें भांग का बोरा भेंट में दूंगा।


तभी--
वो तो ठीक है वत्स बांकेलाल! पर ये संकट तेरा अपना ही खड़ा किया हुआ है। न तू राजा बनने का लालच करके यहां आता और न इस मायाजाल में फंसता। अब फंसा है तो भुगत। हीहीही।
नहीं भोले शंकर! मैं इस जंजाल से निकल-कर फौरन ही विशालगढ़ पहुंचना चाहता हूं। बहुहुहु।
वरना कल का क्या भरोसा ? मेरी डायन पत्नी कल मुझसे बर्तन भी मंजवाने लगेगी। बहुहुहु। अपने बालक पर दया करो भगवान। बहुहुहु।
तो फिर सुन बांके। पर पहले कान खोल कर सुन। एक बोरा भांग वाली बात मत भूल जाइयो हीहीही।
वत्स बांकेलाल। मुझे पता है कि तेरी जान उस दुष्ट डायन की मुट्ठी में है। उससे पीछा छुड़ाना आसान नहीं है। किंतु...
किंतु क्या भगवान?
कल उसका जन्मदिन है। कल के दिन वो तेरी जान एक दिन के लिए अवश्य छोड़ देगी। क्योंकि जन्मदिन वो केवल अपना मनाएगी। अगर उसने तेरी आत्मा को आजाद किए बिना अपना जन्मदिन मना लिया तो वो उसका मरण दिन बन जाएगा।

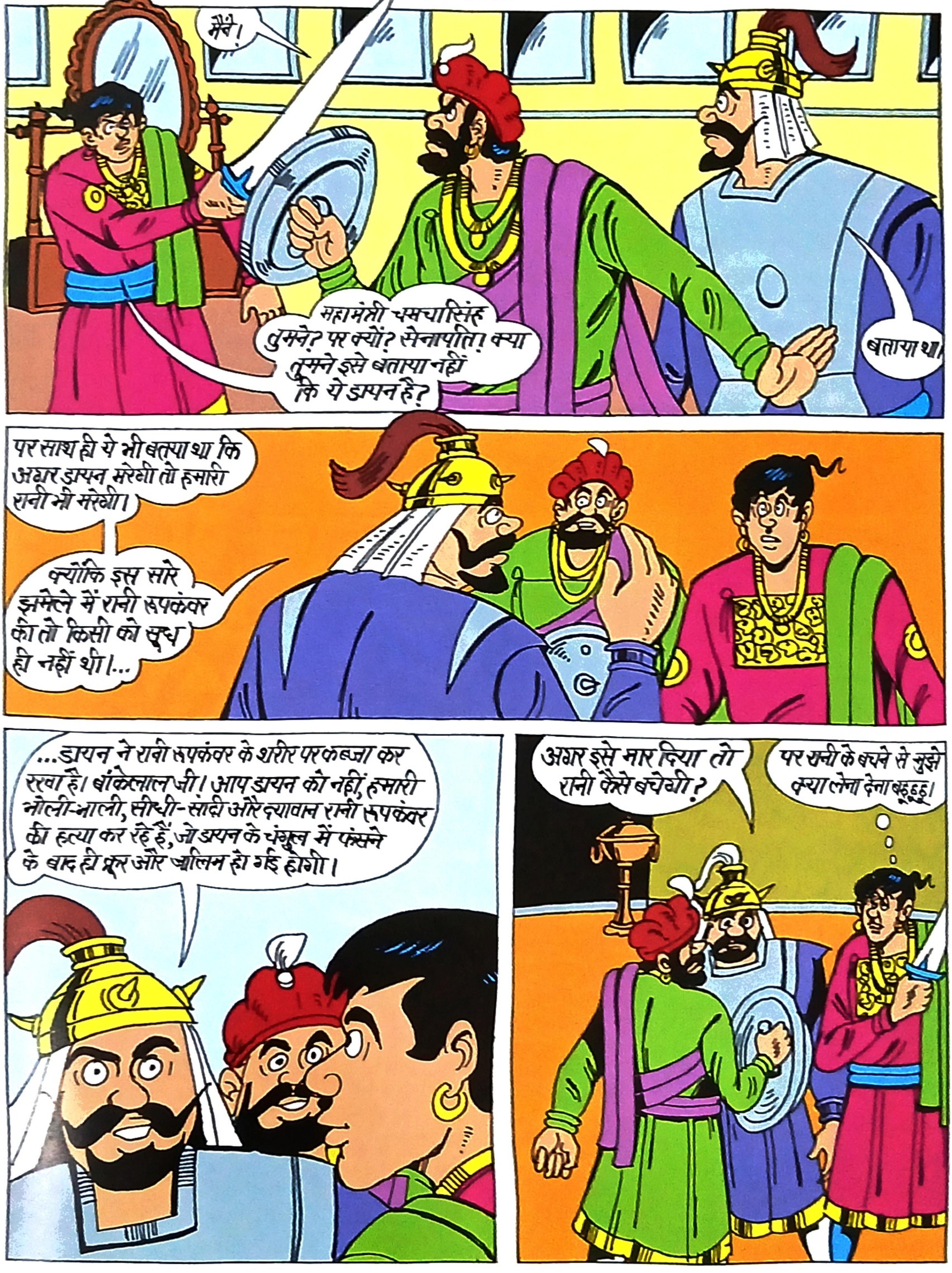

कल प्रातः से सूर्यास्त तक अगर तू उसे मारने की कोई योजना बनाए तो वो अवश्य ही सफल होगी। क्योंकि तब तेरी जान तेरे अंदर ही होगी। अच्छा, अब मैं
चलता हूं। भांग का बोरा मत भूलियो वत्स बांकेलाल!
जय हो भोले शंकर बर्फानी की।
काम होते ही भिजवा दूंगा भगवान। हीहीही।
वो मारा पापड़वाले को। सूर्योदय होने वाला है। चिड़िया भोर का संदेश लेकर आ रही हैं।
चींचीं। हम विशालगढ़ की चिड़ियां हैं। और बांकेलाल। बाल-बच्चे राजी हैं। मोटा तुझे बहुत याद करता है। अरे। वही अपना विक्रमसिंह हीहीही।
तभी--
बांकेलाल! मैं वापस आ गई। डायन कह रही थी कि सूर्यास्त को मुझे वापस उसकी मुट्ठी में आ जाना है।
दुष्टयंती तेरे दिन पूरे हो गए। हीहीही।


बांकेलाल बाहर ही निकला था कि--
बांकेलाल जी। हीहीही। सबको पहनाकर देख लीं। पर ये जूती किसी को पूरी नहीं आई। कृपा कर अब आप कष्ट करें।
!!
हीहीही। अब इन्हें बता देने में कोई हर्ज नहीं कि...
...ये जूती मेरी ही है। और डायन को बचाने वाला मैं ही था।
क्या?
किंतु आपने ऐसा क्यों किया? कम से कम मुझे जूती सूंघने से तो रोका होता। बहुहुहु। उसके बाद में कई बार बेहोश हुआ।
सेनापति। उस वक्त स्थिति कुछ और थी। अब कुछ और है।
अगर उस वक्त मैं डायन को न बचाता तो मैं भी दम घुटने से डायन के साथ ही मारा जाता। क्योंकि मेरी जान डायन की मुट्ठी में थी। हीहीही।
बांकेलाल सेनापति को सबकुछ बताता चला गया।


सब कुछ कह लेने के बाद--
किंतु भोलेशंकर की कृपा से अब मुझे पता चल गया है कि आज सूर्यास्त तक मेरी जान मेरे अंदर ही रहेगी। अगर मैं डायन को सूर्यास्त से पहले ही मार दूंगा तो मैं मुक्त हो जाऊंगा। हीहीही।
सेनापति! लाओ तलवार मुझे दो। जाते ही पेट के अंदर घोंप दूंगा। हीहीही। गुर्रर्र।
!!
हीहीही। कदम-कदम बढ़ाए जा खुशी के गीत गाए जा। हीहीही रानी के मरते ही छत्तीसगढ़ मेरा। हीहीही।
!!
रानी रूपकंवर! मरने के लिए तैयार हो जा। हीहीही।
आज मेरा मरण दिन नहीं जन्मदिन है बांकेलाल! जरा मेरी चप्पलें उठाकर देना तो।


पर बीच में आ गया दहाड़।
गुर्र्र्र! (ओय पागल। रानी से पहले तुझे मेरे प्राण लेने होंगे जो कि न तो तेरे बस की है और न तेरी तलवार के बस की। हीहीही।)
मुझे पता था कि तू बीच में जरूर आएगा।
तेरा इंतजाम भी मैं करके चला हूं दहाड़! तेरा जबड़ा पालतू पशु की तरह बंद कर देता हूं ताकि तू ज्यादा चपड़-चपड़ न कर सके। हीहीहि।
गुर्र्र्र (आंय! अबे ये क्या बांध लिया इसे खोल बे।)
हीहीही। डायन रानी दुष्टयंती! अब तू मेरे हाथों से नहीं बचेगी।
नहीं। अगर तुमने मुझे तलवार मारी तो तुम भी नहीं बचोगे। क्योंकि तुम्हारी जान मेरी मुट्ठी में है।
ओह! इस वक्त मेरा वस्त्र ढीठ भी मेरे पास नहीं है।
हीहीही। मुझे पता चल चुका है डायन रानी कि मेरी जान इस वक्त मेरे ही अंदर है। और मैं तुझे सूर्यास्त से पहले मार सकता हूं।


डायन रानी ने बांकेलाल के होठों पर कंघी रगड़ दी--
ये मेरी जुंओं वाली कंघी है बांकेलाल। मेरी जुंओं में मेरा खून भरा है जो तेरे अंदर जाकर तुझे भी राक्षस बना देगा। हीहीही।
थू! थू!
ओह! जूंए थूक दीं।
अब तू गई काम से दुष्टा दुष्टवंती!
लेकिन--
टनाक
ये ढाल किसने बीच में अड़ा दी?


मैंने।
महामंत्री चमचासिंह तुमने? पर क्यों? सेनापति! क्या तुमने इसे बताया नहीं कि ये डायन है?
बताया था।
पर साथ ही ये भी बताया था कि अगर डायन मरेगी तो हमारी रानी भी मरेगी।
क्योंकि इस सारे झमेले में रानी रूपकंवर की तो किसी को सुध ही नहीं थी।...
...डायन ने रानी रूपकंवर के शरीर पर कब्जा कर रखा है। बांकेलाल जी। आप डायन को नहीं, हमारी भोली-भाली, सीधी-सादी और दयावान रानी रूपकंवर की हत्या कर रहे हैं, जो डायन के चंगुल में फंसने के बाद ही क्रूर और जालिम हो गई होगी।
अगर इसे मार दिया तो रानी कैसे बचेगी?
पर रानी के बचने से मुझे क्या लेना देना खूहूहू।


तभी--
तड़ाक
हीहीही! तुम लोगों की बहस ने मुझे इतना अवसर दे दिया कि मैं अपना खास दीठ निकाल लाई, जो जब तक मेरे हाथ में रहता है, तब तक मुझे कोई परास्त नहीं कर सकता। हीहीही।
सिर्फ एक रानी की जान बचा कर मैं पूरे छत्तीसगढ़ के निवासियों को डंडबोड़ा नहीं बनने दूंगा सेनापति! क्योंकि ये जिन्दा रही तो सबके जबड़े तोड़ देगी।
हीहीही।
नहीं रुक जाओ। बांकेलाल जी।
अब मैं नहीं रुकूंगा। (हीहीही। ऐसा मौका फिर कहां मिलेगा?)
मैं भी नहीं रुकने की...
तड़ाक
क्योंकि मेरे दीठ का डण्डा ज्यादा लम्बा है। हीहीही।
आइऽऽ
बांकेलाल के जबड़े को देखकर डायन रानी प्रसन्नता से उछल पड़ी--
अरे वाह! जबड़ा।
बहुहुहु! हुण अप्पा दा की होऊ भाप्पें।
ये तो पू... पूरे छत्तीस दांतों का है। हीहीही।
हीयूऽऽऽ
मार लिया मैदान।
अब दीठ की भी जरूरत नहीं।


प्रसन्नता से नाच ही तो उठी डायन रानी दुष्टयंती।
नाचे मन मोरा मगन तिगड़ा धिकी धिकी हीहीही।
ये नाच क्यों रही है? बहूहूहू।
बेवकूफ सेनापति! सुना नहीं इसे छत्तीस दांतों वाला जबड़ा मिल गया है। जिसके लिए इसने उत्पात मचा रखा था। बहूहूहू। मुझे क्या पता था कि ऐसा जबड़ा मेरा ही होगा। बहूहूहू।
हीहीही। राक्षस लोक से भागने के बाद मेरी डायन शक्तियां स्वयंमेव छिन गई थीं। जिन्हें वापस पाने के लिए ही मुझे छत्तीस दांतों का जबड़ा चाहिए था। छत्तीस का आंकड़ा किसी भी खोई शक्ति को वापस ला सकता है। हीहीही।
ये देखो! मेरी शक्तियां वापस मेरे शरीर में समा रही हैं।
अब मैं यहां स्वतंत्र रूप से राज करूंगी। किसी ने कोई पंगा किया तो देखो मेरी डायन शक्तियों का एक नमूना।
स...सांप?
फूं! क्यों बे? अकड़ रिया है?
महामंत्री! सेनापति! जाओ मेरे लिए खाने का प्रबंध करो।
स्वामी बांकेलाल! तुम कहां चले। मेरे पांव कौन दबाएगा? हीहीही।
बहूहूहू! नहीं मुझे छोड़ दो। मैं की कुसूर कीत्ता। बहूहूहू।
हुण अप्पा दी की होऊ। बहूहूहू।
गर्रर्र! (स्वामिनी! जरा एक नजर इधर भी। इसने मेरे थोबड़े पर पता नहीं क्या बांध दिया है। इसे भी खोल दें। हीहीही।)
इस तरह बांकेलाल कुछ नहीं कर पाया और सूर्यास्त होते ही उसकी आत्मा भी दुष्टयंती की मुट्ठी में वापस चली गई।

समाप्त


बांकेलाल! मैं डायन कबाड़ा तुझे कबाड़े से मार-मार कर कबाड़ा बना दूंगी।
बांकेलाल और कबाड़ा
राज कॉमिक्स में हास्य सम्राट बांकेलाल का हास्य कॉमिक


वाह! गुरु! आज मुम्बई के हरेक गैस सिलेंडर में से आइसक्रीम निकल रही है।
आज हम सब खाना नहीं आइसक्रीम खाएंगे।
शंकालू! आज तो सभी मुम्बईवासी आइसक्रीम खा लेंगे लेकिन ये सोचो गैस नहीं होगी तो कल के बाद खाना कैसे पकेगा?
Chaubey Vineet.
इस समस्या का गमराज ने क्या हल निकाला जानने के लिए पढ़ें:
DOGA YEAR
मूल्य: 10/-
आई लव माई इंडिया
राज कॉमिक्स में ट्रेजडी किंग गमराज का हास्य कॉमिक


रेडी
कैमरा रोलिंग
एक्शन
मैं हूं डायरेक्टर नंबर वन
और ये हैं मेरी शूटिंग के...
सुपर स्टार
अगस्त 2000 में उपलब्ध
फाइटर टोड्स बन गए हैं 'मोस्ट वाण्टेड' सुपर स्टार्स, लेकिन किसकी नजरों में?
जानने के लिए पढ़िए फाइटर टोड्स का एक्शन और शूटिंग से मालामाल ये विशेषांक

RAJ COMICS
राज कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA

बांकेलाल

हास्य सम्राट बांकेलाल।
उसका डेढ़ पसली बदन, सिर पर लगा बोदी वाला एंटीना, और सामने के निकले दो दांत ही उसके षड्यंत्रकारी दिमाग में चल रही खुराफातों को उजागर कर देते हैं।
सदियों से ही उसका बस एक ही सपना है, किसी तरह विशालगढ़ के महाराज विक्रम सिंह को रास्ते से हटाकर खुद राजा बनना। मगर, एक श्राप के कारण, वो जिसका भी बुरा करने निकलता है, उसका भला ही हो जाता है। नित नई योजना बनाता बांकेलाल न चाह कर भी हर मुश्किल हल करके बन जाता है सबका प्यारा बांकेलाल।



प्रिय दोस्तों,
1986 में राज कॉमिक्स की स्थापना के बाद से आज तक आप सभी का जो अटूट प्रेम मिला, साथ मिला, उसके लिए हम हृदय से आपके सदा आभारी हैं।
आपका,
मनोज गुप्ता



COMICS
ISBN 978-93-324-0476-2
GENL-1070
₹100.00
www.rajcomics.net